Shukla, Shri Vidya Charan
Siddheshwar Prasad, Shri
Singh, Shri D. N.
Sinha, Shri Mudrika
Sinha, Shri R. K.
Sinha, Shri Satya Narayan
Snatak, Shri Nar Deo
Sonar, Dr. A. G.
Sonavane, Shri
Sudarsanam, Shri M.
Surendra Pal Singh, Shri
Suryanarayana, Shri K.
Swaran Singh, Shri
Swell, Shri
Tarodekar, Shri V. B.
Tiwary, Shri D. N.
Tiwary, Shri K. N.
Tripathi, Shri K. D.
Tula Ram, Shri
Ulaka, Shri Ramachandra
Veerappa, Shri Ramachandra
Venkatasubbaiah, Shri P.
Virbhadra Singh, Shri
Vyas, Shri Ramesh Chandra
Yadav, Shri Chandra Jeet

MR. SPEAKER : The result of the Division is : Ayes 72*, Noes : 203.†

The Motion was Negatived

14.43 HRS.

MOTION RE : CONDUCT OF TWO MEMBERS DURING PRESIDENT'S ADDRESS—*contd.*

MR. SPEAKER : The House will now take up further consideration of the following motion moved by Shri P. Venkatasubbaiah on the 20th February, 1968, namely :—

"That this House strongly disapproves of the conduct of Sarvashri Maulana Ishaq Sambhali and H. N. Mukerjee who created obstruction and showed disrespect to the President at the time of his Address to both the Houses of Parliament assembled together under article 87 of the Constitution on the 12th February, 1968 and reprimands them for their undesirable, undignified and unbecoming behaviour."

श्री इसहाक साम्भली (अमरोहा) : अध्यक्ष महोदय, मेरे और मेरे लीडर हीरेन मुकर्जी के बारे में एक रेजोलूशन इस ऐवान में पेश हुआ है जिसमें यह कहा गया है कि 12 फरवरी को हम लोगों ने बयान देकर वाकआउट किया उसके बारे में डिसऐपूवल किया जाय। मुझे ताज्जुब है कि वाकआउट करने वाले दो नहीं बल्कि लगभग 80 या उस से भी ज्यादा थे लेकिन मालूम नहीं यह डिस्क्रिमनेशन क्यों किया जा रहा है कि दो ही के बारे में यह प्रस्ताव लाया गया ? अब अगर वाकआउट करना जुर्म है और अगर एक सही बात कहना जुर्म है तो सब उसके मुजरिम थे सिर्फ हम दो ही नहीं थे।

अध्यक्ष महोदय, सवाल यह है कि हम ने क्या किया ? मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि मैंने जो कुछ वहां कहा उस के अल्फाज यहां गलत तौर पर सुनाये गये। मिस्कोटेशन किसी तरह भी इखलाक या इंसाफ के लिहाज से सही नहीं है। इसलिए बड़ा जरूरी है कि जो इल्जाम लगाया गया है मैं उस के बारे में दो लफ्ज कह दूं। मैंने वहां जो कुछ कहा इत्तिफाक से मैंने वह पहले लिख लिया था और वह लिखा हुआ अब भी मेरे पास मौजूद है इसलिए मैं चाहता हूं कि उसे मैं पहले आप की खिदमत में पेश कर दूं। मैंने कहा था।

"राष्ट्रपति जी, हमारे मुल्क में 20 साल के से फासिस्ट लोग फिरके दाराना फसादात के जरिए मुस्लिम माइनारिटी कम्युनिटी के लोगों को कत्ल व गारत कर रहे हैं। अब तक लगभग 7500 फिरकेदाराना फसाद हुए हैं जिन में सिर्फ इन दो महीनों में 29 फसाद हुए हैं और जिन में मर्दों को ही नहीं औरतों

*Sarvashri Kanwar Lal Gupta, Pasha bhai Patel and D. N. Deb also wanted to vote for *'AYES'*.

†Sarvashri Sursingh and C. A. Patil also wanted to vote for *'NOES'*.

[श्री इसहाक सामली]

और बच्चों तक को कत्ल किया गया है। आप मेहरबानी करके बतलायें कि आप की सरकार इन को रोकने के लिए क्या कर रही है ?"

इस पर हमारे बुजुर्ग और हमारे निहायत मोहतरम राष्ट्रपति जी खड़े हुए और उन्होंने यह अल्फाज कहे। वह भी मेरे पास नोट हैं। उन्होंने कहा : "उस के लिए यह मुनासिब वक़्त नहीं है।" तब मैंने और मेरे बहुत से साथियों ने एस० एम० बनर्जी, ज्योतिर्मय बसु, धीरेश्वर कलिता, सरजू पाण्डेय और दूसरे कितने ही साहबान ने, एक दो ने नहीं सब ने एक आवाज में कहा कि और कौन सा वक्त आयेगा ? मैंने अपनी बात को पूरा करते हुये कहा और कौन सा वक्त आयेगा ? सूबों में सियासी बहाने लेकर सरकारी मदाखलत यानी इंटरफीएरेंस की जाती है मगर इस कत्ल और बर्बादी को रोकने के लिए क्यों नहीं मदाखलत की जाती और क्यों नहीं कदम उठाया जाता। हम मजबूर होकर अब वाकआउट करते हैं।"

यह मेरे अल्फाज थे जो इत्तिफाक से मेरे पास लिखे हुये हैं। अध्यक्ष महोदय, हम समझते हैं कि यह पार्लियामेंट, हमारा ज्वाएंट सशन, हमारा कांस्टीट्यूशन और हमारा यह डेमोक्रेटिक सिस्टम हम को इजाजत ही नहीं देता बल्कि हम से तकाजा करता है कि इन्साफ के लिये आवाज उठायें हम से तकाजा करता है कि अगर कहीं नाइंसाफी हो रही है किसी पर जुल्म हो रहा है तो उस जुल्म के खिलाफ आवाज उठायें।

राष्ट्रपति जी के लिए मेरे दिल में किसी से कम इज्जत नहीं है। मेरे दिल में उन का बड़ा ऐहतराम और इज्जत है। उन्होंने अभी एड्रस शुरू नहीं किया था ..... (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, यह हालत इन कांग्रेस वालों की है। यह कभी इंसाफ की बात तो कह ही नहीं सकते और शायद कह भी दें तो सुन नहीं सकते। यह इन के संग दुश्वारी है। जैसा मैंने कहा हमारे कि दिल में राष्ट्रपति जी के लिए किसी से कम इज्जत नहीं है और उन की बे-इज्जती करने का कोई सवाल ही नहीं था। अगर हम कोई ऐसी बात करना चाहते तो जब वह बोलना शुरू करते तभी हम बोलते लेकिन मैंने और हमारे लीडर श्री मुकर्जी ने उस वक्त कहा जबकि उन्होंने अपना एड्रैस शुरू नहीं किया था। हमारे लीडर श्री हीरेन मुकर्जी ने साफ तौर पर कह दिया कि हमारी मंशा बेइज्जती करना नहीं। हमारी मंशा आप की इज्जत में कोई कमी करना नहीं लेकिन हम मज्बूर हैं और जो हालात हुय हैं उन के लिए हम आवाज उठा और वाकआट कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं आप के जरिए से यह अर्ज कर दूं कि मैंने यह मौका उस वक्त क्यों चुना ? वह मौका मैंने इसलिए जानबूझ कर चुना क्योंकि राष्ट्रपति महोदय अपने एड्रस के जरिए से सरकार को पालिसी देते हैं और चूंकि वह अपना एड्रस देने जा रहे थे इसलिए मैंने उनको तवज्जह दिलाई। मैं उसे यहां भी प्रेसीडेंट एड्रैस के डिबेट के दौरान कह सकता था लेकिन यहां पर वह सरकार को पालिसी देने वाले मौजूद नहीं होते हैं इसलिए हमारे वास्ते जरूरी था कि हम पहले इस चीज को कह दें। चुनांचे हम ने पूछा कि आप की सरकार इस सिलसिले में क्या कर रही है। हम जानते हैं कि यह निकम्मी सरकार, यह काहिलों की सरकार यह निकम्मों की सरकार 20 साल हो गए अध्यक्ष महोदय इस दौरान कम्यूनल डिस्टरबैंसेज ही नहीं हुए बल्कि अब तो बढ़ करके यहां तक पहुंची है कि उन्होंने लालैसनैंस को छूट दी, उन्होंने इन फासिस्टों पर कोई ऐक्शन नहीं लिया और महात्मा गांधी से लेकर मेरठ के शहीदों तक का कत्ल हुआ .....

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) यह भी कहिये कि दीनदयाल उपाध्याय तक का कत्ल हुआ।

श्री इसहाक सामली : ठीक है दीनदयाल उपाध्याय जी का भी कत्ल हुआ। यह चीज इतनी बढ़ी कि असम में कत्ल व गारत हुआ,

महाराष्ट्र और गुजरात में कत्ल व गारत हुआ और खुद आप के ही आंध्र प्रदेश में क्या कुछ नहीं हुआ ? इसलिए जरूरी था कि सरकार के कान खोले जाते । मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस से ज्यादा तकलीफदेह मौका हमारे यहां पर और कोई आ सकता है . . .

SHRI P. VENKATASUBBAIAH (Nandyal) : Sir, on a point of order. You were kind enough to give him time to explain his conduct on that day. Shri Ishaq Sambhali is a strange amalgam of communism and communalism. He wants to take this occasion to go beyond what he was asked to do. So, I seek your protection and I request you to see that he confines himself to his explanation.

SHRI BAL RAJ MADHOK (South Delhi) : Sir, I want to support the point of order raised by Shri Venkatasubbaiah. Shri Sambhali is misusing the time of this hon. House. He is trying to use this forum for a dangerous communal propaganda and we condemn it strongly.

SHRI HEM BARUA (Mangaldai) : In the course of my speech that day, I pointed out to a particular portion of the speech of Mr. Ishaq Sambhali. He said, as far as I remember and as my hon. friend Shri Nath Pai remembers—

MR. SPEAKER : What he had said on that day is part of the record.

SHRI HEM BARUA : He was now reading out from a prepared speech, but unfortunately, on that day, he could not read out his prepared speech when the President was addressing the joint session. He therefore uttered a few sentences. Possibly, in that heat and frenzy, at that moment, he used this expression :

"हिन्दुस्तान में मुसलमान बरबाद किया जा रहा है ।"

My submission is this. One can criticise the Government for not being able to give protection to the minority communities, for the success of majority rule depends on its capacity to give protection and security to the minority community. (*Interruption*) What has happened in Meerut is regretable; it was communal. But to condemn the whole of India as communal is wrong, because we all belong to India.

MR. SPEAKER : May I request Mr. Sambhali not to go further into it ? I only wanted him to explain what happened on that day. Please conclude now.

SHRI S. KUNDU (Balasore) : Sir, may I bring one matter to your notice ?

MR. SPEAKER : No, no, Mr. Sambhali is on his legs.

श्री इसहाक सम्भली : अध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ इतना अर्ज कर रहा हूं कि मेरा मंशा . .

एक माननीय सदस्य : एक मिनट में खत्म करें ।

श्री इसहाक सम्भली : माननीय सदस्य कौन टाइम फिक्स करने वाले हैं । यह काम स्पीकर का है । सब स्पीकर बने जा रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय, मैं अर्ज कर रहा था कि जब हम यह देखते हैं कि फैमीन के फोटो, यहां के फसादों के फोटो, दूसरे मुल्कों के पेपर्स में छपते हैं तब क्या हम उन्हें देखते रहें ? नहीं । हमें जरूरी है कि हम उन चीजों की खोज करें कि वह क्यों रही हैं । वह नहीं होनी चाहियें । मुझे खुशी है कि मैंने अपनी पहली स्पीच में, बजट स्पीच में, भी कहा था कि हमारे मुल्क की मैजारिटी, हमारे मुल्क के हिन्दू अवाम, वह हैं जो माइनारिटी का अपनी जानों को खतरे में डालकर जोरदार प्रोटेक्शन करते हैं । यह एक निकम्मी सरकार है और यह यहां के फासिस्ट तत्व हैं जो इन चीजों को कर रहे हैं ।

यह सही है कि मैं माइनारिटी कम्यूनिटी से ताल्लुक रखता हूं । लेकिन मुझे तकलीफ पहुंची, सब को तकलीफ पहुंची । मैंने एक हिन्दुस्तानी की हैसियत से और इस हैसियत से कि अपने मुल्क की आजादी के लिये मैं भी जेल गया हूं, अपनी बात कही थी । मैं किसी और से सबक पढ़ने के लिये हुब्बुल वतनी का, यहां नहीं बैठूंगा । मेरे दिल में किसी से कम मुहब्बत नहीं है हिन्दुस्तान की, और जब देश पर कुर्बानी करने की जरूरत पेश आयेगी तो शायद मैं, अगर किसी से आगे नहीं, तो पीछे नजर नहीं आऊंगा ।

[श्री इसहाक सम्भली]

मेरा मंशा सिर्फ यह था कि मजलूम के लिये आवाज उठाई जाय और मैंने अपने जमीर की आवाज पहुंचाई । मेरा उस देवबन्द से ताल्लुक है जिस देवबन्द ने देश की आजादी में आगे बढ़ कर हिस्सा लिया, जिसने मौलाना हुसेन अहमद मदनी और मौलाना महमूदुल हसन को पैदा किया है । मैं किसी तरह अपने जमीर की आवाज को दबा नहीं सकता । मैं समझता हूं कि अगर इस सरकार के नजदीक मजलूमों की आवाज को उठाना जुर्म है तो यह जुर्म मुझ को, आप को, बार बार करना चाहिये, इन्साफ के लिये बार-बार आवाज उठानी चाहिये । मेरा हर्गिज मंशा प्रेजिडेंट साहब की इन्सल्ट का नहीं है । इसलिये सवाल पैदा ही नहीं होता इसका । लेकिन अगर इन्साफ की आवाज उठानी जुर्म है तो मैं यह जुर्म बार-बार करूंगा ।

[شری اسحاق سمبھلی (امروھا) : ادھیکش مہودئے - میرے اور لیڈر حیرن مکرجی کے بارے میں ایک ریزولوشن اس ایوان میں پیش ھوا ھے جس میں یہ کہا گیا ھے کہ ۱۲ فروری کو ھم لوگوں نے بیان دے کر واک آؤٹ کیا اس کے بارے میں ڈسایپروول کیا جائے - مجھے تعجب ھے کہ واک آؤٹ کرنے والے دو نہیں بلکہ لگ بھگ اس سے بھی زیادہ تھے لیکن معلوم نہیں یہ ڈسکریمنیشن کیوں کیا جا رھا ھے کہ دو ھی کے بارے میں یہ پرستاؤ لایا گیا - اب اگر واک آؤٹ کرنا جرم ھے اگر ایک صحیح بات کہنا جرم ھے تو سب اس کے مجرم تھے صرف ھم دو ھی نہیں تھے -

ادھیکش مہودئے - سوال یہ ھے کہ ھم نے کیا کیا - مجھے دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ھے کہ میں نے جو کچھ وھاں کہا اس کے الفاظ یہاں غلط طور پر سنائے گئے -

مسکوٹیشن کسی طرح بھی اخلاق یا انصاف کے لحاظ سے صحیح نہیں ھے - اس لئے بڑا ضروری ھے کہ جو الزام لگایا گیا ھے میں اس کے بارے میں دو لفظ کہہ دوں - میں نے وھاں جو کچھ کہا اتفاق سے میں نے وہ پہلے لکھ لیا تھا اور وہ لکھا ھوا اب بھی میرے پاس موجود ھے اس لئے میں چاھتا ھوں کہ اسے میں آپ کی خدمت میں پیش کر دوں -

میں نے کہا تھا -

"راشٹرپتی جی - ھمارے ملک میں ۲۰ سال سے فاسسٹ لوگ فرقہ دارانہ فسادات کے ذریعہ مسلم مئنارٹی کمیونٹی کے لوگوں کو قتل و غارت کر رھے ھیں - اب تک لگ بھگ ۷۰۰۰ فرقہ دارانہ فساد ھوئے ھیں جن میں صرف ان دو مہینوں میں ۲۹ فساد ھوئے ھیں اور جن میں مردوں کو ھی نہیں عورتوں اور بچوں تک کو قتل کیا گیا ھے - آپ مہربانی کرکے بتلائیں کہ آپ کی سرکار ان کو روکنے کے لئے کیا کر رھی ھے -"]

آواز اٹھائیں، ہم سے تقاضا کرتا ہے کہ اگر کہیں ناانصافی ہو رہی ہے، کسی پر ظلم ہو رہا ہے تو اس ظلم کے خلاف آواز اٹھائیں۔

راشٹرپتی جی کے لئے میرے دل میں کسی سے کم عزت نہیں ہے۔ میرے دل میں ان کا بڑا احترام اور عزت ہے۔ انہوں نے ابھی ایڈریس شروع کیا تھا.....(ویودھان) ادھیکش مہودئے۔ یہ حالت ان کانگریس والوں کی ہے۔ یہ کبھی انصاف کی بات تو کہہ ہی نہیں سکتے اور شاید سن نہیں سکتے۔ یہ ان کی دشواری ہے۔ جیسا میں نے کہا ہمارے دل میں راشٹرپتی جی کے لئے کسی سے کم عزت نہیں ہے اور ان کی بے عزتی کرنے کا کوئی سوال ہی نہیں تھا۔ اگر ہم کوئی ایسی بات کرنا چاہتے تو جب وہ بولنا شروع کرتے تبھی ہم بولتے لیکن میں نے اور ہمارے لیڈر شری مکر جی نے اس وقت کہا جب کہ انہوں نے اپنا ایڈریس شروع نہیں کیا تھا۔ ہمارے لیڈر شری ہیرن مکرجی نے صاف طور پر کہہ دیا کہ ہماری منشا بے عزتی کرنا نہیں ہے ہماری منشا آپ کی عزت میں کوئی کمی کرنا نہیں لیکن ہم مجبور ہیں اور جو حالات ہوئے ہیں ان کے لئے ہم آواز اٹھا کر واک آوٹ کر رہے ہیں۔

اس پر ہمارے بزرگ اور ہمارے نہایت محترم راشٹرپتی جی کھڑے ہوئے اور انہوں نے یہ الفاظ کہے۔ وہ بھی میرے پاس نوٹ ہیں۔ انہوں نے کہا۔

''اس کے لئے یہ مناسب وقت نہیں ہے۔''

تب میں نے اور میرے بہت سے ساتھیوں نے، ایس۔ ایم۔ بنرجی، جوترمئے بسو، دھیریشور گپتا، سرجو پانڈے اور دوسرے کتنے ہی صاحبان نے۔ ایک دو نے نہیں سب نے ایک آواز میں کہا کہ اور کون سا وقت آئیگا۔ میں نے اپنی بات کو پورا کرتے ہوئے کہا اور کون سا وقت آئیگا۔ صوبوں میں سیاسی بہانے لیکر سرکاری مداخلت یعنی انٹرفیرینس کی جاتی ہے مگر اس قتل اور بربادی کو روکنے کے لئے کیوں نہیں مداخلت کی جاتی اور کیوں نہیں قدم اٹھایا جاتا۔ ہم مجبور ہو کر اب واک آوٹ کرتے ہیں۔

یہ میرے الفاظ تھے جو اتفاق سے میرے پاس لکھے ہوئے ہیں۔ ادھیکش مہودئے۔ ہم سمجھتے ہیں یہ پارلیامنٹ ہمارا جوائنٹ سیشن۔ ہمارا کانسٹیٹیوشن اور ہمارا یہ ڈیموکریٹک سسٹم ہم کو اجازت ہی نہیں دیتا۔ بلکہ ہم سے تقاضا کرتا ہے کہ ہم انصاف کے لئے

[اسحاق سمبھلی]

ادھیکش مہودئے - میں آپ کے ذریعہ سے یہ عرض کر دوں کہ میں نے یہ موقعہ اس وقت کیوں چنا - وہ موقعہ میں نے اس لئے جان بوجھ کر چنا کیونکہ راشٹرپتی مہودئے اپنے ایڈریس کے ذریعہ سے سرکار کو پالسی دیتے ھیں اور چونکہ وہ اپنا ایڈریس دینے جا رہے تھے - اس لئے میں نے ان کی توجہہ دلائی - میں اسے یہاں بھی پریذیڈنٹ ایڈریس کے ڈیبیٹ کے دوران کہہ سکتا تھا لیکن یہاں پر وہ سرکار کو پالیسی دینے والے موجود نہیں ہوتے ھیں اس لئے ھمارے واسطے ضروری تھا کہ ھم اس چیز کو کہہ دیں - چنانچہ ھم نے پوچھا کہ آپ کی سرکار اس سلسلے میں کیا کر رھی ھے - ھم جانتے ھیں کہ یہ نکمی سرکار، یہ کاھلوں کی سرکار، یا نکموں کی سرکار ۲۰ سال ھو گئے اور ادھیکش مہودئے اس دوران کمیونل ڈسٹربینسیز ھی نہیں ھوئے بلکہ اب تو بڑھ کرکے یہاں تک پہنچی ھے کہ انھوں نے لالیسنیس کو چھوٹ دی انھوں نے ان فاسسٹوں پر کوئی ایکشن نہیں لیا اور مہاتما گاندھی سے لے کر میرٹھ کے شہیدوں تک کا قتل ھوا -

شری اٹل بہاری واجپیئی - یہ بھی کہئے کہ دین دیال اپادھیائے تک کا قتل ھوا -

شری اسحاق سمبھلی - ٹھیک ھے دین دیال اپادھیائے کا بھی قتل ھوا - یہ چیز اتنی بڑھی کہ آسام میں قتل و غارت ھوا - مہاراشٹر اور گجرات میں قتل و غارت ھوا اور خود آپ کے آپ کے ھی آندھر پردیش میں کیا کچھ نہیں ھوا - اس لئے ضروری تھا کہ سرکار کے کان کھولے جاتے - میں جاننا چاھتا ھوں کہ کیا اس سے زیادہ تکلیف دیہہ موقعہ ھمارے یہاں پر اور کوئی آ سکتا ھے........

ادھیکش مہودئے - میں صرف اتنا عرض کر رھا ھوں کہ میرا منشا...

ایک مانئییہ سدسیہ : ایک منٹ میں ختم کریں -

شری اسحاق سمبھلی : مانئییہ سدسیہ کون ٹائم فکس کرنے والے ھیں - یہ کام اسپیکر کا ھے- سب اسپیکر بننے جا رہے ھیں -

ادھیکش مہودے - میں عرض کر رھا تھا کہ جب ھم یہ دیکھتے ھیں کہ فیمین کے فوٹو - یہاں کے فسادوں کے فوٹو - دوسرے ملکوں کے پیپرس میں چھپتے ھیں تب کیا ھم انھیں دیکھتے رھیں - نہیں - ھمیں ضروری ھے کہ ھم ان چیزوں کی کھوج کریں کہ وہ کیوں ھو رھی ھیں - وہ نہیں ھونی چاھئیں - مجھے خوشی ھے کہ میں نے اپنی پہلی اسپیچ

یعنی - بجٹ اسپیچ میں بھی کہا تھا کہ ہمارے ملک کی میجاریٹی - ہمارے ملک کے ہندو عوام - وہ ہیں جو مائناریٹی کا اپنی جانوں کو خطرے میں ڈال کر پروٹیکشن کرتے ہیں - یہ ایک نکمی سرکار ہے اور یہ یہاں کے فاسسٹ تتو ہیں جو ان چیزوں کو کر رہے ہیں -.....

یہ صحیح ہے کہ میں مائناریٹی کمیونیٹی سے تعلق رکھتا ہوں - لیکن مجھے تکلیف پہنچی - سب کو تکلیف پہنچی - میں نے ایک ہندوستانی کی حیثیت سے اور اس حیثیت سے کہ اپنے ملک کی آزادی کے لئے میں بھی جیل گیا ہوں - اپنی بات کہی تھی - میں کسی اور سے سبق پڑھنے کے لئے حب الوطنی کا - یہاں نہیں بیٹھوں گا - میرے دل میں کسی سے کم ہندوستان کی محبت نہیں ہے - اور جب دیش پر قربانی کرنے کی ضرورت پیش آئے گی تو شاید میں - اگر کسی سے آگے نہیں - تو پیچھے نظر نہیں آؤنگا -

میرا منشا صرف یہ تھا کہ مظلوم کے لئے آواز اٹھائی جائے اور میں نے اپنے ممبر کی آواز پہنچائی - میرا اس دیو بند سے تعلق ہے جس دیوبند نے دیش کی آزادی میں بڑھ کر حصہ لیا - جس نے مولانا حسین احمد مدنی اور مولانہ محمود الحسن کو پیدا کیا ہے - میں کسی طرح اپنے ضمیر کی آواز کو دبا نہیں سکتا - میں سمجھتا ہوں کہ اگر اس سرکار کے نزدیک مظلوموں کی آواز کو اٹھانا جرم ہے تو یہ جرم مجھ کو - آپ کو بار بار کرنا چاہئے - انصاف کے لئے بار بار آواز اٹھانی چاہئے - میرا ہرگز منشا پریزیڈینٹ صاحب کی انسلٹ کا نہیں ہے - اس لئے سوال پیدا ہی نہیں ہوتا اس کا - لیکن اگر انصاف کی آواز اٹھانی جرم ہے تو میں یہ جرم بار بار کرونگا -]

MR. SPEAKER : Three amendments have been moved to this motion by Shri Madhu Limaye, Shri Vajpayee and Shri S. M. Banerjee.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, अभी मौलना इसहाक साम्भली ने जो वक्तव्य दिया है, उस से हम सब को बड़ी चोट लगी है। हमारी भावनायें उत्तेजित हो रही हैं। अब मैं अपना अमेंडमेंट प्रेस नहीं करूंगा। हम ने निर्णय किया है कि हम श्री वेंकटसुब्बाया के मोशन का समर्थन करेंगे।

MR. SPEAKER : Mr. Vajpayee is not pressing his amendment. It will be deemed to be withdrawn.

Shall I put Mr. Limaye's amendment to the House ?

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : अगर माननीय सदस्य अपना प्रस्ताव वापस लेंगे तो मैं अपना संशोधन वापस लूंगा। वह कोई ऊटपटांग भाषण कर रहे हैं, इस लिये मैं अपना रुख, स्टैन्ड नहीं बदलूंगा।

MR. SPEAKER : The question is :

That in the motion,—

for

"strongly disapproves of the conduct of Sarvashri Maulana Ishaq Sambhali

[Mr. Speaker]

and H. N. Mukerjee who created obstruction and showed disrespect to the President at the time of his Address to both the Houses of Parliament assembled together under article 87 of the Constitution on the 12th February, 1968 and reprimands them for their undesirable, undignified and unbecoming behaviour",

substitute—

"after taking into consideration the happenings at the time of the President's Address to Members of Parliament on the 12th February, 1968, is of opinion that the Rules of Parliament should provide for the ventilation of grievances by Members of Parliament at the joint opening session of Parliament every year". (1)

Those in favour may say 'Aye'.

SOME HON. MEMBERS : Aye.

MR. SPEAKER : Those against may say 'No'.

SEVERAL HON. MEMBERS : No.

MR. SPEAKER : The 'Noes' have it.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : The 'Ayes' have it.

MR. SPEAKER : This is Mr. Limaye's amendment.

SHRI S. M. BANERJEE : Yes; still I can ask for a division on it.

MR. SPEAKER : I know you can ask. But your amendment is coming next and you have a chance of asking for a division then.

The 'Noes' have it, the 'Noes' have it.

The motion was negatived.

MR. SPEAKER : I will now put Mr. Banerjee's amendment to the House.

The question is :

That in the motion,—

(i) *for* "strongly disapproves of", *substitute*—"having considered".

(ii) *omit* "who created obstruction and showed disrespect to the President" and *for* "his" *substitute* "President's".

(iii) *for* "and reprimands them for their undesirable, undignified and unbecoming behaviour"

substitute—"recommends that no action be taken against them". (3)

The motion was negatived.

15 HRS.

MR. SPEAKER : I will now put Mr. Venkatasubbaiah's motion.

The question is :

"That this House strongly disapproves of the conduct of Sarvashri Maulana Ishaq Sambhali and H. N. Mukerjee who created obstruction and showed disrespect to the President at the time of his Address to both the Houses of Parliament assembled together under article 87 of the Constitution on the 12th February, 1968 and reprimands them for their undesirable, undignified and unbecoming behaviour."

The Lok Sabha divided :

AYES

Division No. 6] **[15.03 Hrs.**

Agadi, Shri S. A.
Ahirwar, Shri Nathu Ram
Aga, Shri Ahmad
Ahmed, Shri F. A.
Amat, Shri D.
Amin, Shri R. K.
Amin, Shri Ramchandra J.
Ankineedu, Shri.
Arumugam, Shri R. S.
Asghar Husain, Shri
Awadesh Chandra Singh, Shri
Ayarwal, Shri Ram Singh
Azad, Shri Bhagwat Jha
Babunath Singh, Shri
Bajaj, Shri Kamalnayan
Bajpai, Shri Vidya Dhar
Barua, Shri Bedabrata
Barua, Shri R.
Basu, Dr. Maitreyee
Baswant, Shri
Berwa, Shri Onkar Lal
Bhagat, Shri B. R.
Bhakt Darshan, Shri
Bhandare, Shri R. D.
Bhanu Prakash Singh, Shri
Bhargava, Shri B. N.

Bhattacharyya, Shri C. K.
Bhola Nath, Shri
Birua, Shri Kolai
Brij Bhushan Lal, Shri
Buta Singh, Shri
Chanda, Shri Anil K.
Chanda, Shrimati Jyotsna
Chatterji, Shri Krishna Kumar
Chaturvedi, Shri R. L.
Chaudhary, Shri Nitiraj Singh
Chauhan, Shri Bharat Singh
Chavan, Shri Y. B.
Choudhary, Shri Valmiki
Dalbir Singh, Shri
Damani, Shri S. R.
Das, Shri N. T.
Dasappa, Shri Tulsidas
Dass, Shri C.
Deo, Shri R. R. Singh
Deoghare, Shri N. R.
Desai, Shri C. C.
Desai, Shri Morarji
Deshmukh, Shri B. D.
Deshmukh, Shri K. G.
Devgun, Shri Hardayal
Dhillon, Shri G. S.
Digvijai Nath, Shri Mahant
Dinesh Singh, Shri
Dixit, Shri G. C.
Dwivedi, Shri Nageshwar
Gandhi, Shrimati Indira
Ganga Devi, Shrimati
Gautam, Shri C. D.
Gavit, Shri Tukaram
Ghosh, Shri Bimalkanti
Ghosh, Shri Parimal
Girja Kumari, Shrimati
Giriraj Saran Singh, Shri
Goel, Shri Shri Chand
Govind Das, Dr.
Gowd, Shri Gadilingana
Gowder, Shri Nanja
Gupta, Shri Kanwar Lal
Hari Krishna, Shri
Hazarika, Shri J. N.
Hem Raj, Shri
Iqbal Singh, Shri
Jadhav, Shri Tulshidas
Jadhav, Shri V. N.
Jamir, Shri S. C.
Kachwai, Shri Hukam Chand
Kahandole, Shri Z. M.
Kamble, Shri
Kamala Kumari, Kumari
Karan Singh, Dr.
Kasture, Shri A. S.
Katham, Shri B. N.
Kavade, Shri B. R.
Kedaria, Shri C. M.
Kesri, Shri Sitaram
Khan, Shri Zulfiquar Ali
Khanna, Shri P. K.
Kinder Lal, Shri
Kisku, Shri A. K.
Kothari, Shri S. S.
Kotoki, Shri Liladhar
Koushik, Shri K. M.
Kripalani, Shrimati Sucheta
Krishna, Shri M. R.
Krishnan, Shri G. Y.
Kureel, Shri B. N.
Kushwah, Shri Y. S.
Lalit Sen, Shri
Laxmi Bai, Shrimati
Lobo Prabhu, Shri
Lutfal Haque, Shri
Madhok, Shri Bal Raj
Mahadeva Prasad, Dr.
Mahajan, Shri Vikram Chand
Mahida, Shri Narendra Singh
Mahishi, Dr. Sarojini
Majhi, Shri M.
Mandal, Dr. P.
Mane, Shri Shankarrao
Masani, Shri M. R.
Meena, Shri Meetha Lal
Mehta, Shri Asoka
Mehta, Shir P. M.
Melkote, Dr.
Menon, Shri Govinda
Mishra, Shri Bibhuti
Mishra, Shri G. S.
Mody, Shri Piloo
Mohamed Imam, Shri J.
Mohammad Yusuf, Shri
Mohinder Kaur, Shrimati
Mrityunjay Prasad, Shri
Mukerjee, Shrimati Sharda
Murthy Shri B. S.
Muthusami, Shri C.
Naghnoor, Shri M. N.
Naik, Shri G. C.
Naik, Shri R. V.
Nayar, Dr. Sushila
Oraon, Shri Kartik
Pandey, Shri K. N.
Pant, Shri K. C.
Parmar, Shri D. R.
Partap Singh, Shri
Parthasarathy, Shri
Patel, Shri Manubhai
Patel, Shri N. N.
Patel, Shri Pashabhai
Patil, Shri Anantrao
Patil, Shri C. A.
Patil, Shri Deorao

Patil, Shri S. B.
Patil, Shri T. A.
Poonacha, Shri C. M.
Pradhani, Shri K.
Puri, Dr. Surya Prakash
Qureshi, Shri Mohd. Shaffi
Radhabhai, Shrimati B.
Raj Deo Singh, Shri
Rajani Gandha, Kumari
Rajasekharan, Shri
Ram Dhan, Shri
Ram Dhani Das, Shri
Ram Sewak, Shri
Ram Subhag Singh, Dr.
Ram Swarup, Shri
Rampure, Shri Mahadevappa
Rana, Shri M. B.
Rane, Shri
Ranga, Shri
Rao, Dr. K. L.
Rao, Shri K. Narayana
Rao, Shri Muthyal
Rao, Shri J. Ramapathi
Rao, Shri Thirumala
Rao, Dr. V. K. R. V.
Raut, Shri Bhola
Reddi, Shri G. S.
Reddy, Shri Ganga
Reddy, Shri R. D.
Rohatgi, Shrimati Sushila
Roy, Shri Bishwanath
Roy, Shrimati Uma
Sadhu Ram, Shri
Saha, Dr. S. K.
Saigal, Shri A. S.
Saleem, Shri M. Y.
Salve, Shri N. K. P.
Sambasivam, Shri
Sanghi, Shri N. K.
Sankata Prasad, Dr.
Sant Bux Singh, Shri
Sapre, Shrimati Tara
Sayeed, Shri P. M.
Sayyad Ali, Shri
Sen, Shri A. K.
Sen, Shri Dwaipayan
Sethi, Shri P. C.
Sethuramae, Shri N.
Shah, Shrimati Jayaben
Shah, Shri Manabendra
Shah, Shri T. P.
Shambhu Nath, Shri
Shankaranand, Shri B.
Sharma, Shri Beni Shankar
Sharma, Shri D. C.
Sharma, Shri M. R.
Sharma, Shri N. S.
Shastri, Shri B. N.
Shastri, Shri Raghuvir Singh
Shastri, Shri Ramanand
Shastri, Shri Sheopujan
Shastri, Shri Shiv Kumar
Sheo Narain, Shri
Sher Singh, Shri
Sheth, Shri T. M.
Shinde, Shri Annasahib
Shiv Chandika Prasad, Shri
Shivappa, Shri N.
Shukla, Shri S. N.
Shukla, Shri Vidya Charan
Siddheshwar Prasad, Shri
Singh, Shri D. N.
Sinha, Shri Mudrika
Sinha, Shri Satya Narayan
Snatak, Shri Nar Deo
Sonar, Dr. A. G.
Sonavane, Shri
Sudarsanam, Shri M.
Suraj Bhan, Shri
Surendra Pal Singh, Shri
Sursingh, Shri
Suryanarayana, Shri K.
Swaran Singh, Shri
Tapuriah, Shri S. K.
Tarodekar, Shri V. B.
Tiwary, Shri D. N.
Tiwary, Shri K. N.
Tula Ram, Shri
Tyagi, Shri O. P.
Uikey, Shri M. G.
Ulaka, Shri Ramachandra
Vajpayee, Shri Atal Bihari
Veerappa, Shri Ramachandra
Venkatasubbaiah, Shri P.
Verma, Shri Prem Chand
Vidyarthi, Shri R. S.
Virbhadra Singh, Shri
Vyas, Shri Ramesh Chandra
Yadav, Chri Chandra Jeet

NOES

Abraham, Shri K. M.
Adichan, Shri P. C.
Anbazhagan, Shri
Banerjee, Shri S. M.
Basu, Shri Jyotrimoy
*Bist, Shri J. B. S.

*Wrongly voted for 'NOES'.

Chandra Shekhar Singh, Shri
Chaudhuri, Shri Tridib Kumar
Daschowdhury, Shri B. K.
Deiveekan, Shri
Fernandes, Shri George
Jha, Shri S. C.
Kalita, Shri Dhireswar
Kandappan, Shri S.
Khan, Shri Latafat Ali
Kirutinan, Shri
Krishnamoorthi, Shri V.
Limaye, Shri Madhu
Madhukar, Shri K. M.
Maiti, Shri S. N.
Mayavan, Shri
Meghachandra, Shri M.
Menon, Shri Vishwanatha
Mohan Swarup, Shri
Molahu Prasad, Shri
Nair, Shri Vasudevan
Nihal Singh, Shri
Paswan, Shri Kedar
Patel, Shri J. H.
Ramabadran, Shri T. D.
Ray, Shri Rabi
Reddy, Shri Eswara
Roy, Shri Chittaranjan
Samanta, Shri S. C.
Sambandhan, Shri S. K.
Sambhali, Shri Ishaq
Sen, Shri Deven
Shastri, Shri Ramavatar
*Sinha, Shri R. K.
Sivasankaran, Shri
Thakur, Shri Gunanand
Viswanatham, Shri Tenneti
Viswanathan, Shri G.
Yadav, Shri Jageshwar
Yajnik, Shri

MR. SPEAKER : The result of the Division is :

Ayes : 241†; Noes : 45**.

The motion was adopted.

15.02 HRS.

RAILWAY BUDGET—GENERAL DISCUSSION

MR. SPEAKER : The House will now take up General Discussion on the Budget (Railways)

SOME HON. MEMBERS *rose*—

MR. SPEAKER : Shri Lobo Prabhu.

15.03 HRS.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

SHRI LOBO PRABHU (Udipi) : Mr. Deputy-Speaker, Sir, it is not very easy to come into the quiet waters of the Railways Budget after all the high-notes of the debate we had today. Nonetheless, this is an occasion, an exercise celebrated annually by the Railways to escalate fares and freights on one side and posts and projects on the other. This Budget raises the revenue and expenditure on the maintenance side by Rs. 45 crores. It escalates freight, expenditure to Rs. 892 crores. Somehow it appears that the Railway Ministry thinks of crores as if they were thousands and rupees as if they were pennies. For this reason alone can one understand the increase from Rs. 243 crores in 1950-51 to this figure of Rs. 892 crores this year. These are astronomical figures, because during the same period no one, not even a dreamer on that side could believe that the railway has increased its services, or increased its capital, to that extent.

About these total figures I would make the first charge of miscalculation. The hon. Minister says that the budget of 1966-67 ended with a deficit of Rs. 24 crores, even though an over-estimate of Rs. 5.6 crores was available on the expenditure side to cancel that deficit. In the current budget he anticipates a deficit of Rs. 17.5 crores and an increase in expenditure to the tune of Rs. 244 crores. From these figures one can expect nothing but miscalculation in the budget placed before us.

I feel that I can make a contribution to this budget by examining the figures of the past three budgets with patience but

---

*Wrongly voted for 'NOES'.

†Sarvashri J. B. S. Bisht, R. K. Sinha, Devinder Singh and D. N. Deb also wanted to vote for 'AYES'.

**Sarvashri P. Ramamurti, S. M. Joshi and J. M. Biswas also wanted to vote for 'NOES'.